शिकायतकर्ता से ही मांगा जाता है गड़बड़ दूध का सैंपल, खुद सैंपल लेने नहीं जाते अधिकारी

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) किसी भी सरकार का यह सबसे महत्वपूर्ण दायित्व है कि उसके नागरिकों को शुद्ध एवं मिलावट रहित खाद्य पदार्थ उपलब्ध हो सकें। इसके विपरीत यहां इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि हम क्या समझ के क्या खा रहे हैं। किसी भी खाद्य पदार्थ के मिलावट रहित होने का भरोसा करना बहुत ही कठिन कार्य है। कहने को तो भारत सरकार ने मिलावट रहित खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) बना रखा है लेकिन यह महकमा अपना दायित्व निभाने की अपेक्षा पूरी तरह से लूट कमाई में जुटा हुआ है। इसके लिए न केवल स्थानीय स्तर पर तैनात अधिकारी बल्कि जांच करने का पूरा सिस्टम ही इस तरह से बनाया गया है कि मिलावट भी चलती रहे और लूट कमाई भी चलती रहे।

स्थानीय स्तर पर सैंपल भरकर जांच लेबोरेटरी तक भेजने वाले अधिकारियों से लेकर लेबोरेटरी में जांच करने वाले अधिकारियों तक सभी लोग इस खेल में शमिल हैं। मिलावटी सैंपल के भरे जाने से बचने के लिए लगभग सभी संबंधित व्यापारी सैंपल भरने वालों को बाकायदा महीना देते हैं। जो महीना देने से यह कह कर इनकार करते हैं कि वे मिलावट का कोई धंधा करते ही नहीं, उसे मिलावट के केस में फंसाना इनके बाएं हाथ का खेल है। इतना ही नहीं यदि किसी का मिलावटी सैंपल भर भी लिया गया हो तो उसे लेबोरेटरी से पास कराना भी इनके लिए उतना ही सरल है और यह सारा धंधा कोई चोरी छिपे नहीं चल रहा बल्कि सरेआम चल रहा है। जिले के तमाम अधिकारियों और राजनेताओं के संज्ञान में यह सारा खेल बाखूबी चल रहा है लेकिन कोई किसी को पूछने वाला नहीं है। अच्छी लूट कमाई वाला स्टेशन पाने के लिए अधिकारी उच्च अधिकारियों और नेताओं को मोटा सुविधा शुल्क तो चुकाते हैं, उनकी सेवा-पानी भी करते रहते हैं।

गर्मी बढ़ने के कारण दूध अब जल्दी खराब हो (फट) रहा है। पलवल, मेवात के दूर-दराज इलाकों से भोर पहर दूध दुहवा कर लाने वाले दुधियों को इसके उपभोक्ता तक पहुंचने से पहले खराब होने का डर रहता है। दूध काफी समय तक खराब न हो इसके लिए दूधिए इसमें प्रतिबंधित जहरीले केमिकल मिलाते हैं। एक दूधिए ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि दूध को फटने से बचाने के लिए फार्मालिन (40 प्रतिशत) और हाईड्रोजन परॉक्साइड रसायन का इस्तेमाल किया जाता है। उसके अनुसार सैंपल लेने वाले अधिकारी दूध को सुरक्षित करने के लिए फार्मालिन का इस्तेमाल करते हैं। इसलिए हम लोग भी इस केमिकल का इस्तेमाल करते हैं। इसके दो फायदे हैं, पहला कि दूध चौबीस घंटे से अधिक समय बीत जाने पर भी नहीं फटता, दूसरा कि यदि सैंपलिंग की जाती है तो अधिकारी भी यहीं केमिकल डालते हैं, ऐसे में हमारा सैंपल फेल नहीं होता। बताया कि हाइड्रोजन परॉक्साइड उस दूध में डाला जाता है जिसमें से क्रीम निकाल ली जाती है। हाइड्रोजन परॉक्साइड डाले जाने का फायदा यह होता है कि इसका फैट कंटेट कम नजर नहीं आता और दूध बारह से पंद्रह घंटे तक नहीं फटता।

यह दोनों ही केमिकल बहुत ही खतरनाक हैं। फार्मालिन का इस्तेमाल शवों को सड़ने से बचाने में किया जाता है जबकि हाइड्रोजन परॉक्साइड का इस्तेमाल विसंक्रमीकरण करने में किया जाता है। यह दोनों रसायन किडनी, आंत, त्वचा और फेफड़ों के गंभीर रोग होने का कारण बन सकते हैं।

एफएसएसएआई के जिला अभिहीत अधिकारी पृथ्वी सिंह से मिलावटी दूध बेचे जाने की शिकायत की गई तो उन्होंने माना कि दूधिए फार्मालिन मिला सकते हैं। उन्होंने दूध में मिलावट की जांच कराने के लिए फूड सेफ्टी ऑफिसर डॉ. सचिन शर्मा से मिलने की सलाह दी। डॉ. सचिन शर्मा ने दूध में फार्मालिन मिलाए जाने की बात सिरे से नकराते हुए कहा कि इस केमिकल में बहुत तीखी महक होती है इसलिए इसे नहीं मिलाया जा सकता। हालांकि उन्होंने माना कि दूध का सैंपल लेकर इसी केमिकल को डाला जाता है ताकि दूध कई दिन तक खराब न हो। उन्होंने कहा कि यदि किसी व्यक्ति को किसी दूधिए के दूध की गुणवत्ता पर शक है तो वह उससे दो लीटर दूध लेकर उनके कार्यालय पहुंचा दे। वह इसकी जांच कराएंगे यदि दूध में गड़बड़ी पाई गई तब वह दूधिए के दूध का सैंपल लेकर दोबारा जांच कराएंगे।

फूड सेफ्टी ऑफिसर डॉ. सचिन शर्मा भूल गए कि दूधिए से दूध खरीद कर लाने वाला व्यक्ति सैंपल करने का अधिकार नहीं रखता। यदि सैंपल फेल भी हो गया तो यह साबित नहीं किया जा सकता कि दूध उसी दूधिए से खरीदा गया था। इसके लिए तो वह खुद प्राधिकृत हैं, शिकायत मिलने पर दूधिए के सामने सैंपल लेकर उसके सामने सील करें, नमूने पर उसके हस्ताक्षर भी लें, लेकिन यह सब कौन करे इसलिए पीड़ित को ऐसा काम बता दो कि या तो वह शिकायत करना छोड़ दे या फिर दूध पीना।

नहीं थम रहा बल्लबगढ़ के सरकारी डॉक्टरों का निकम्मापन

पहले दलित राजबीर की इलाज न मिलने से मौत हुई, अब सुआ मार कर घायल किए गए युवक की मेडिकल रिपोर्ट में कुंद हथियार से हमला होना लिखा

बल्लबगढ़ (मज़दूर मोर्चा) स्थानीय सरकारी अस्पताल के डॉक्टर लगातार अपने निकम्मेपन के कारण चिकित्सा पेशे को बदनाम कर रहे हैं। पुलिस हिरासत में मौत के करीब पहुंचे दलित राजबीर की अस्पताल में इलाज नहीं मिलने से मौत की घटना को दो हफ्ते भी नही बीते थे कि यहां के डॉक्टर हितेश ने मारपीट की घटना में गंभीर रूप से घायल युवक की चोटों को साधारण बता कर अस्पताल से चलता कर दिया। निजी अस्पताल में युवक के पैर का ऑपरेशन कराया गया। पीड़ित ने डॉ. हितेश के खिलाफ स्वास्थ्य व गृहमंत्री अनिल विज से शिकायत कर कार्रवाई की मांग की है।

सेक्टर 62 निवासी मोनू दलाल को कुछ अराजकतत्वों ने 13 मई की रात घेर कर उस पर लाठी-डंडा, सुआ आदि हथियारों से हमला कर दिया था। भाई सोनू दलाल मोनू को लहूलुहान हालत में उठाकर स्थानीय सिविल अस्पताल ले गया। इधर परिजनों ने पुलिस में भी हमले की शिकायत दर्ज करा दी। अस्पताल में मौजूद डॉ. हितेश नागर ने मोनू का मेडिकल चेकअप किया। मोनू के चेहरे, पैरों पर सूए से बने घावों से खून बह रहा था।

डॉ. हितेश ने निरीक्षण कर जो एमएलआर बनाई उसमें धारदार हथियार के घाव होने के बावजूद ब्लंट यानी कुंद हथियार से हमला करना लिख दिया। हालांकि उन्होंने अपनी रिपोर्ट में इन घावों का जिक्र किया लेकिन घावों की गंभीरता पर संदेह जताते हुए केयूओ यानी केप्ट अंडर ऑब्जर्वेशन लिख दिया। उन्होंने एक्स रे और ऑर्थो ओपिनियन लिख कर अपना पल्ला झाड़ लिया। मरीज की गंभीर अवस्था होने के बावजूद इलाज की जगह प्राथमिक उपचार देकर चलता कर दिया। यहां बड़ा सवाल यह भी उठता है कि केयूओ लिखने के बजाय तुरंत एक्स रे व अन्य जांच क्यों मुकम्मल नहीं की जातीं।

मजबूर होकर परिजन मोनू को सेक्टर आठ स्थित एक निजी अस्पताल ले गए। जहां जाते ही तुरंत पता लग गया कि पैर की हड्डी टूट गई है जिसमें सर्जरी कर के प्लेट डाली गई। सिविल अस्पताल वाले इलाज बेशक न करें लेकिन इतना तो बता सकते थे कि हड्डी टूट गई है और प्लेट डलेगी, लेकिन न बताने की ही तो लूट कमाई है।

मोनू के परिवार वालों का आरोप है कि डॉक्टर हितेश ने दोषी हमलावरों से मोटे पैसे लेकर गलत रिपोर्ट लिखी। इसकी आड़ लेकर पुलिस ने साधारण मारपीट की धाराओं में केस दर्ज किया, जबकि हमलावर उसके पैर तोड़ कर और आखें फोड़ कर जान लेने पर आमादा थे। भाई सोनू ने उम्मीद जताई है कि स्वास्थ्य एवं गृह मंत्री अनिल विज उनकी शिकायत को गंभीरता से लेकर डॉक्टर हितेश नागर के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करेंगे।

वैसे उम्मीद करने में कोई हर्ज भी नहीं है क्योंकि इसके अलावा वे कुछ कर भी नहीं सकते। यदि मंत्री विज कुछ करने वाले होते तो हितेश जैसे डॉक्टर रोजाना यही धंधा न कर रहे होते।

दीपेश ने पावर लिफ्टिंग में एक गोल्ड, तीन सिल्वर मेडल जीते

तामिलनाडु में आयोजित राष्ट्रीय सब जूनियर पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में जमाई फरीदाबाद की धाक

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) शहर के होनहार बेटे दीपेश मोर ने राष्ट्रीय सब जूनियर पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में एक स्वर्ण और तीन ओवरऑल रजत पदक जीत कर फरीदाबाद का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रौशन किया। दीपेश घंटाघर पुलिस चौकी बल्लबगढ़ इंचार्ज प्रदीप मोर के पुत्र हैं। बुधवार को नगर आगमन पर दीपेश का जोरदार स्वागत किया गया और हांगकांग में होने वाली एशियन चैंपियनशिप में बेहतर प्रदर्शन की शुभकामनाएं दी गईं।

कोच रजनी राठी ने बताया कि राष्ट्रीय सब जूनियर पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप 12 मई से 17 मई 2023 के बीच तमिलनाडु में संपन्न हुई थी। इसमें दीपेश मोर ने 120 किलोग्राम भार वर्ग में ओवरऑल 3 सिल्वर मेडल और डेडलिफ्टिंग में गोल्ड मेडल प्राप्त किया है।

रजनी राठी ने बताया कि अब हांगकांग में होने वाली एशियन चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल प्राप्त करने का लक्ष्य बनाकर दीपेश को कड़ी ट्रेनिंग दी जाएगी। चैंपियनशिप में शहर का झंडा गाड़ कर बुधवार को लौटे दीपेश का दिल्ली एयरपोर्ट पर स्वागत किया गया। इसके बाद वह पारिवारिक सदस्यों के साथ कालका माता मंदिर में माथा टेकने पहुंचे। यहां से सेक्टर 55 स्थित अपने आवास पहुंचे जहां स्थानीय निवासियों और जननायक जनता पार्टी एनआईटी के वरिष्ठ नेता हाजी करामत अली, फीवा के महासचिव गुरमीत सिंह देओल एवं वरिष्ठ उप प्रधान मुकेश चौधरी, विनोद गौड़ हरीश गौतम, सरदार सुरजीत सिंह, गिरिराज सिंह जागर, राकेश जैन, कमल पटेल आदि ने फूल माला पहना कर उनका स्वागत किया। बेटे को राष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी बनने की प्रेरणा देने वाले पिता प्रदीप मोर को भी बुके और तलवार भेंट कर सम्मानित किया गया। वहां उपस्थित महिला शक्ति एवं युवा साथियों ने दीपेश को नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए शुभकामनाएं दीं।